साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 45, सितम्बर(द्वितीय) , 2018

पुस्तक समीक्षा-
"उठने लगे सवाल (दोहा-संग्रह)"

समीक्षक - प्रो० शरद नारायण खरे

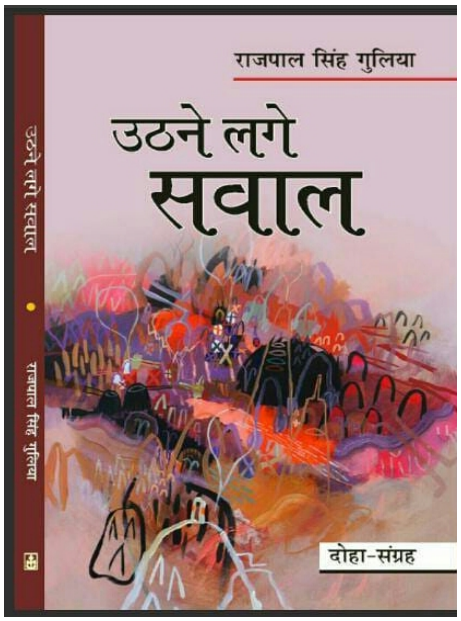

समीक्ष्य कृति समसायिक दोहों का एक सुवासित गुलदस्ता है । विविध-वर्णी दोहे विसंगतियों,विद्रूपताओं ,नकारात्मकताओं,रुग्णताओं व विडम्बनाओं पर सशक्त व तीखा प्रहार करते हैं। हर दोहा सार्थक व प्रभावशाली है। दोहों में एक गम्भीरता व ऊर्जा है इसलिए हर दोहा अपना पृथक अंदाज रखता है ।

"जग ने ओछे लोग यूँ, दिखलाते औकात।
बौने कन्धे बैठकर ,करें गगन से बात ।।

सच कहना भी आजकल ,सरल नहीं है काम।
पत्थर को पत्थर कहा , लूटा काँच तमाम ।।

बेचा उसने खेत को , लुटा दिए सब काम।
आकर लेबर चौक पर ,खोज रहा अब काम

यह यथार्थ है कि वर्तमान में दोहों की लोकप्रियता असीमित हुई है । वैसे तो दोहों का महत्व सदैव से व्यापक रहा है ,पर इस समय दोहों की गतिशीलता ,तीव्रता व प्रस्तुति अपनी श्रेष्ठता की उच्च अवस्था में है। इसालिए दोहों का सृजन दोहाकारों द्वारा समग्रता के साथ किया जा रहा है। वैसे भी दोहा-सर्जन में अति गम्भीरता , परिपक्वता,समपर्ण व दिव्यता की आवश्यक्ता होती है,तभी दोहा पैना होकर अपनी सार्थकता को प्रमाणित करने में सफल सिद्ध हो पाता है । इस दृष्टि से समीक्ष्य कृति के सर्जक राजपाल सिंह गुलिया जी एक सक्षम व समर्थ दोहाकार बनकर प्रस्तुत होते हैं। उनके दोहों में एक अंतनिर्हित चेतना,मौलिकता व उत्कृष्टता दृष्टिगोचर होती है ।

" संबंधों में बढ़ गया, इतना मान गुमान ।
तरस रहे दो बोल को ,दीवारों के कान ।।

रहा पूछता देर तक, जोड़े दोनों हाथ ।
यहां पिसेगा कब तलक, घुन गेहूँ के साथ।।

शातिर चौकीदार का, ये कैसा किरदार ।
चोर गए तो कह रहा, जागो साहूकार।।

इस कृति के दोहे वस्तुत: व्यक्ति, समाज, रूढ़ियों, नैतिक पतन, रुग्णताओं , विडंबनाओं,आंतरिक कलुषता, अनुशासनहीनता ,कर्तव्यच्युतता, चरित्रहीनता, आत्मकेंद्रितता,आत्ममुग्धता, दोमुखापन आदि पर केंद्रित है। यह यथार्थ है दोहाकार की लेखनी में एक ओज है ,एक तेज है ,एक सामर्थ्य है ,एक परवाह है ,एक रवानगी है -

"दोस्त जब दुश्मन हुए, थी वाणी करतूत।
दुनिया में बस बोल से,हुए पराये पूत।।

घोटालों के देश में, घपलों का जंजाल ।
अपने उस मतदान का, कब तक करें मलाल।।

जब रहबर के हाथ में, आये खुलकर वोट ।
लगी पूछकर बैठने ,सभी सियासी गोट।।

" उठने लगे सवाल "के दोहों में ताजगी है तो एक चौखापन भी है ।जहां व्याकरण की दृष्टि से हर दोहा समुचित है वहीं पर कथ्य की दृष्टि से भी प्रखरता का प्रतिनिधित्व करता है। वैसे हर दोहे में एक सादगी है, एक मिठास है, जो कि सुखद एहसास कराती है। देश समाज की जो दशा/दुर्दशा है उस पर गुलिया जी ने साधिकार कलम चलाई है ।

एक अच्छे समाज की रचना के प्रति आशान्वित दोहाकार,बुराइयों पर प्रहार करके सामाजिक सरोकारों का निर्वाह करते हैं , जो कि उनके सामयिक होने का परिचायक भी है ।

हलजीवी भी हैरान है, गरज रहे घनश्याम।
इस कुदरती प्रकोप का, किसको दे इल्जाम ।।

बिन पैसे संसार में ,हुआ नहीं कुछ काम।
मोल लिया है बैर भी ,देकर उनको दाम ।।

पढ़ कुरान की आयतें ,रटकर वैदिक मंत्र ।
रचता हरदम आदमी ,कपट भरे षड्यंत्र।।

समाज में यंत्र तंत्र सर्वत्र रुग्णताएं व्याप्त हैं, जो आम आदमी के लिए दर्द /पीड़ा/ टीस का विषय है ।इनको देखकर हर संवेदनशील व्यक्ति आकुल-व्याकुल होता

है तथा छटपटाता है। ऐसे में भावप्रवण कवि क्योंकर न मर्माहत होगा ? इस कृति का रचनाकार भी अपने दर्द को कुछ इस प्रकार से अभिव्यक्ति देता है-

"कथनी-करनी में मिला, बहुत विरोधाभास।
बातें हमको भूप की, लगीं आज उपहास।।

धमकी गर तुम दे रहे ,तो इतना लो जान।
डरा रहे हो आग से, चूल्हे को श्रीमान।।

कौर चोर के हाथ से, खाकर बोला श्वान।
कहीं नहीं इस लूट का, बाकी रहे निशान ।।

वस्तुत:, इस कृति के दोहों में व्यापकता/विविधता समाहित है , जो पाठक को बहुत कुछ सोचने समझने पर विवश कर देती है !राजनीति ,धर्म,नैतिकता,मानवीय मूल्य,रिश्ते-नाते सभी कुछ वर्तमान में पतनोन्मुख है। 'उठने लगे सवाल' के दोहे उस पतन को रोकने की एक अभिनंदनीय कोशिश हैं। आकर्षक पर सादगी से युक्त मुखपृष्ठ देखकर आनंद व संतोष का अनुभव होता है। यह कृति चर्चित होकर सर्जक के सरस्वतयश में वृद्धि करेगी -यह तय ही मानना चाहिये ।

समीक्षित कृति -उठने लगे सवाल (दोहा-संग्रह)
कृतिकार - राजपाल सिंह गुलिया
मूल्य -200 ₹
प्रथम संस्करण -2018
प्रकाशक -अयन प्रकाशन,नई दिल्ली

समीक्षक- प्रो० शरद नारायण खरे विभागाध्यक्ष इतिहास ,
शासकीय जे०एम०सी० महिला महाविद्यालय ,
मण्डला (म०प्र०) -481661
मो० 9425484382
E mail - khare.sharadnarayan@gmail.com

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें